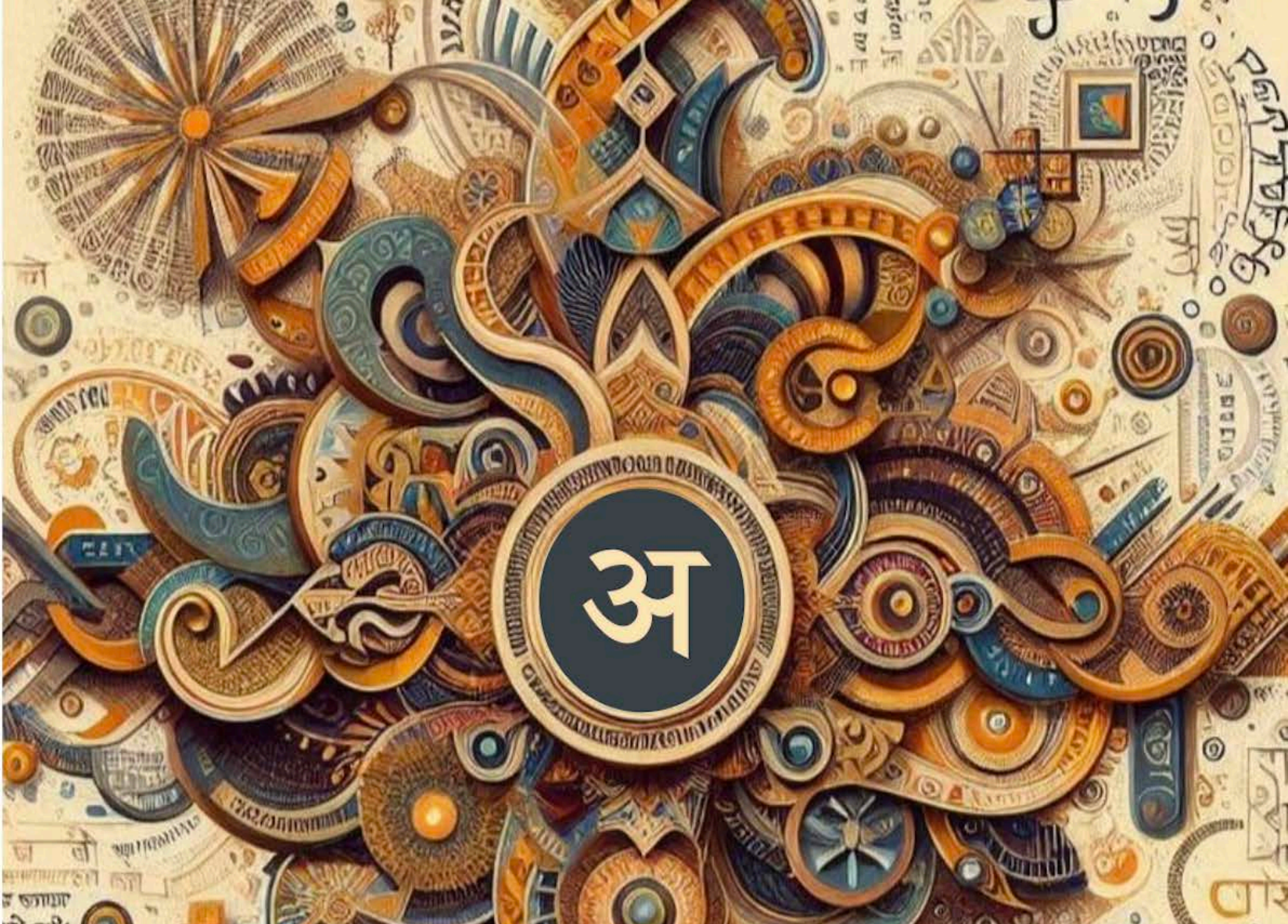

अग्निगर्भा शब्द

राजी सेठ

अग्निगर्भा शब्द

(कविता संग्रह)

राजी सेठ

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: जुलाई, 2024

© राजी सेठ

आमुख

प्रतिलिपि बनकर जीना संज्ञा प्रतिपादित नहीं करती

शब्द अग्निगर्भा होते ही हैं। अर्थ गाम्भीर्य से लबरेज! ऐसा गह्वर; जहाँ से शब्द अग्नि का तेज, जागरण और प्रकाश की लौ लेकर आते हैं और शब्दयात्रा को ज्योति से भर देते हैं। यथा- 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' का आह्वान करते हैं। इन्हीं अर्थ- व्यंजना को लेकर सृजनरत् राजी सेठ का यह काव्य- संग्रह 'अग्निगर्भा शब्द' प्रसूत हुआ है। राजी सेठ की ये सारी काव्य.यात्राएँ समकालीनता.बोध की उपस्थिति दर्ज करती हैं। सदी से बात करने की, सदी से अपनी बात कहने की कवयित्री राजी सेठ तत्पर हैं। इनकी कविताएँ कहती हैं- ''मुझे जल्दी में मत पढ़ो। थोड़ा रुककर, ठहरकर... पढ़ो... मैं तुम्हें अर्थवान्वित करूँगी।'' ऐसी कविताओं की अनुगूँज के लिए 'अग्निगर्भा' शब्द सार्थकता की पुष्टि करता है, सोच की सकारात्मक ज्योति को जलाये रखने की ऊर्जा देता है।

कोई नहीं जानता
किसे सूझ जाएगा अग्निगर्भा शब्द
अनुगूँजों वाला अर्थ

यह 'अनुगूँजों वाला अर्थ' ही अग्निगर्भा शब्द को शब्दायित करता है। प्रस्तुत संग्रह की कविताएँ उक्त अर्थबोध को बोधित हैं। शब्द.मौन जिजीविषा का ही आदिप्त हठ है जिससे राजी सेठ की कविताएँ सावेगित बोलती हैं हक से! समय और समकाल का स्वर कवयित्री राजी सेठ की कविताओं में निनादित है। स्त्री.स्वर मुखरित हुआ है। पति

और पिता दोनों से साग्रह सवाल करती कविताएँ संवेदना के झील में कंकड़ की मीठी चोट है जो रिश्तों की हिलोरें लेने को सम्बल प्रदान करती हैं। रिश्तों के रेशे में रम्यता का रमना रंग भरने लगता है। राजी सेठ का अनुभूत सत्य तथ्य से इतना रागवेष्ठित है कि उनकी कविताएँ सत्यानुभूति की साधना करती हैं। राजनीति की नीति अनीति में ‘ताबेदारों को पता है’ कविता आँखों में अर्थ की अनुगूँज भर देती है। स्त्री.सत्व की संस्कारित कविताएँ स्नेह व सोच को विस्तार देती हैं। राजी की कविताएँ साफ कहती हैं- ‘‘प्रतिलिपि बनकर जीना संज्ञा प्रतिपादित नहीं करती’’ यह संज्ञान होना ही प्रसूत काव्य-संग्रह का अभिप्रेत है!

-डॉ. डी. एन. प्रसाद

वाराणसी

उस ‘वात्सल्य’ को जिसने कविताओं की संगत की....

बहुत- सा अनुभव सिर से गुजर गया, इसलिए बहुत.सी बातें नयी नहीं लगती। जो mentally tickle करती हैं उन्हें दवजम करने का आलस्य घेरता है। आलस्य को खखोलने बैठो तो छोर के अंत में एक गठरी बँधी है- जिसे खोल दो तो कहेगी मरना बँधा है.... फिर किसलिए यह 3-5 (तीन-पाँच)! यह एक बात है जो कभी नहीं भूलती। जीवन-काव्य का यही सत्य है जिससे मुठभेड़ मानव.काव्य को करना ही पड़ता है।

-राजी सेठ

अनुक्रम

चला आ रहा हो कोई	11
शत्रु कोई और है	14
हाथ अगर हाथ हैं तो	16
पति के लिए	19
पिता को कह नहीं पाई थी मैं स्त्री हूँ	21
आत्मन का लिबास	23
रास्ता भी रोशनी भी	25
ताबेदारों को पता है	27
नहीं तो मैं	30
सागर	33
कच्चे हैं पुल	34
आते हैं लोग	35
तसलीमा नसरीन	36
स्वतन्त्रता के बाद	37
ओ मेरे दुधमुँहों	38
माँ-पिता	39

आदिप्त हठ	41
वह अपना ही चैतन्य था	42
सिर्फ इतिहास	43
कितना बीहड़	44
उधर से आवाज़	45
पुलिस खखोलेगी धड़	46
ईर्ष्या	48
जन्मदिन	49
मेरे पीछे	51
सदी से कहो	53
देख नहीं सकता कभी आकाश	56
विधवा	57
वे जरूर डाकू थे	58
बोलता रोमांच	59
कब उमड़ोगे भीतर	60
शब्द-मौन	61
जिजीविषा	63

मेरा ही स्मरण	64
अडिग पहाड़	65
प्रयास	66
तुम्हारे खड़े रूप को	67
प्रतिबिम्बन	69
अपने लिए शब्द	70
कच्चा मन	71
नयी आशा से लड़ना	72
अपना आकाश छूना न चाहे	73
आवाज़ की कटार	74
सपने आवेगित	75
इसी तरह पाया/ लौटाया	76
पूरा सूरज	77
तुम	78
हाथ	79
मिट्टी की देह	80
क्षमा	81

मेरा ढार-ढार रोना	82
आकांक्षा का बल	83
तब से अब तक	84
अब मैं हूँ	86
तादात्मय	87
उतना बस	88
पहुँचने तक का	89
कौन-सी संज्ञा	90
मुक्ति अकेली नहीं होती	91
मुझे प्रतीक्षा रहेगी तुम्हारी	92
वह मन्दिर	94
आत्मबल	95
जो बस मैं थी	96
बहुत- बहुत अखरा	97
प्रतिलिपि बनाकर जिया है	98
वर्षगाँठ	100
तुम्हें अनुराग पहुँचे	102

रचना की संज्ञा 103

मनुष्य हथियार धारण करता है 104

नेह दिया/लिया 105

तोड़ो-गढ़ो 106

खुली किताब हुई होती! 107

सुनोगे 108

जाने बिना 109

मैं नहीं हारी 110

न्याय दूसरे का होता है 112

हम नहीं सोच पायेंगे 113

मेरे होने की संगति 114

इसीलिए चुप 115

चला आ रहा हो कोई

सामने
रेला आता है निकल जाता है
फिर कोई दूसरा रेला
काट नहीं पाता आँख का लेजर, कि
दीख ही जाए
कौन- सी काया में
कहीं- कहीं
रखी हुई है
कोई एक वस्तु
जिससे फूट पड़ती है किरणें
अक्सर बाहर

वस्तु का धारक भी जान नहीं पाता
कहाँ रखी हुई है कोई एक वस्तु
जिससे फूट सकती है किरणें
अक्सर बाहर